विपिन जारोली

एक कालजयी स्तोत्र : भक्तामर स्तोत्र

चरम तीर्थंकर श्रमण भगवन्त महावीर स्वामी की अविछिन्न श्रमण-परम्परा में महामुनि मानतुंगाचार्य विरचित 'भक्तामर स्तोत्र' अपरनाम 'आदिनाथ स्तोत्र' एक महाप्रभावक एवं कालजयी स्तोत्र है। वसन्त तिलका (मधु माधवी) छन्द में निबद्ध क्लासिकल (उच्च स्तरीय शास्त्रीय) अलंकृत शैली में संस्कृत भाषा में रचित कई दृष्टियों से सर्वोपरि इस मनोमुग्धहारी स्तोत्र में परिष्कृत भाषा सौष्ठव, सहजगम्य छन्द प्रयोग, साहित्यिक सौन्दर्य, निर्दोष काव्य-कला, उपयुक्त छन्द, अर्थ, अलंकारों की छवि दर्शनीय है तथा इसमें अथ से इति एक भक्तिरस की अमीय धारा प्रवाहित है।

''भक्तामर स्तोत्र'' आह्लादक, भक्तिरसोत्पादक, वीतरागदशा प्रदायक स्तुति ''तमसो मा ज्योतिर्गमय'' की एक अनूठी, अनुपम, अद्वितीय काव्य कृति है। इसका प्रत्येक श्लोक ''सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्'' की छटा समेटे हुए हैं। श्लोकों में प्रयुक्त उपमा, उपमेय, उत्प्रेक्षा, रूपक, अर्थान्तरन्यास, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों की पावन सुर-सरिता श्रद्धालुओं को परमात्म तत्व की अवगाहना कराती है।

आध्यात्मिक दृष्टि से इस स्तोत्र में जहां एक ओर भक्ति, काव्य, दर्शन तथा जैन धर्म तत्व के सिद्धान्तों एवं आत्मा और कर्म के सनातन संग्राम का स्वरूप, चिन्तन तथा विवेचन है, वहां दूसरी ओर लौकिक दृष्टि से विपदा, आपदा, भय, कष्ट पीड़ा, परीक्षा प्रतियोगिता, उत्पीड़न, चुनौती आदि त्रासों से मुक्ति का कल्याणकारी सुख, संम्पदा, संतोष, शान्तिदायक स्वरूप, चित्रण और विवेचन भी स्पष्टत: दृष्टिगोचर होता है।

'भक्तामर स्तोत्र' के सम्बन्ध में संस्कृत-साहित्य के विश्रुत विद्वान डॉ० ए० वी० कीथ का कथन है' ''यह स्तोत्र पारमात्मिक दृष्टि से आत्म-कल्याणार्थ सृजित है और इसका प्रत्येक श्लोक आध्यात्मिक और देव काव्य के अन्तर्गत आता है। इसका प्रत्येक पद, पंक्ति और शब्द सहज, सरल, सरस एवं सुगम है। पढ़ने तथा श्रवण मात्र से इसके यथार्थ भावों का बोध होता है। अर्थ की श्रेष्ठता बोधक उज्ज्वल पदों का नियोजन होने से प्रसादगुण निहित है। एक वस्तु के गुण अन्य वस्तुओं के गुणों के नियोजित होने के कारण इसमें समाधि गुण है। परस्पर गुम्फित शब्द रचना होने से इसमें श्लेष गुण समाहित है। छोटे बड़े समासों-संधियों के प्रयोग तथा कोमल कान्त पदावली-शब्दावली के होने से यह ओजगुण समन्वित है। यहां तक कि ''टवर्ग' के कठोर शब्दों का प्रयोग नहीं होने से यह स्तोत्र माधुर्य गुण से सराबोर है।''

ऐसे आध्यात्मिक काव्य, कला, भाषा, भक्ति, प्रसाद, माधुर्य, ओज भावों आदि गुणों /विशेषताओं से सुसम्पन्न सहज, सरल, सरस, सहज, कोमलकान्त शब्दावली-पदावली अदि से प्रवहमान स्तोत्र का प्रारम्भ ''भक्तामर'' शब्द से होने से श्रद्धुलाओं ने इसे ''भक्तामर स्तोत्र'' से अभिहित किया है, जो कि सर्वत्र प्रचलित है। स्तोत्र के द्वितीय श्लोक में चतुर्थ चरण के अन्त में ''प्रथमं जिनेन्द्रम्'' के उल्लेख से स्पष्ट है कि यह स्तोत्र प्रथम जिनेन्द्र तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की भक्ति पूर्ण स्तुति में विरचित कालजयी स्तोत्र है।

''भक्तामर स्तोत्र'' एक कालजयी स्तोत्र इसलिए है कि जब से इसकी रचना हुई है तब से लेकर आज तक जैन धर्म दर्शन की सब ही सम्प्रदायों, उप सम्प्रदायों में समानरूप से तथा जैनेतर विद्वानों-श्रद्धालुओं द्वारा अबाध गति से पढ़ा तथा पाठ किया जाता रहा है और भविष्य में अनन्तकाल तक इसी प्रकार पढ़ा तथा पाठ किया जाता रहेगा।

इस स्तोत्र में कुल ४८ (अड़तालीस) श्लोक निबद्ध हैं। कुछ विद्वान, श्रद्धालु तथा संत इसे ४४ (चवालीस) तथा कुछ ५२ (बावन) श्लोकी इस स्तोत्र को मानते हैं। ४९ (उनचास) से लेकर ५२ (बावन) श्लोकों का जहां तक सम्बन्ध है, ये ४ श्लोक मेरे संग्रह में ५ (पांच) प्रकार के हैं। इससे लगता है कि संभवत: किन्हीं स्तुतिकारों ने अपनी-अपनी भक्ति के आवेग में इन्हें रचकर इस स्तोत्र में सम्मिलित कर लिये हों, जो भी हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यह विवाद का विषय नहीं है कि स्तोत्र में श्लोकों की संख्या कितनी है और कितनी होनी चाहिये, यह विषय तो श्रद्धा, भक्ति और स्तुति का है, संख्या का नहीं।

भक्ति रसात्मक विश्व स्तोत्र साहित्य में ''भक्तामर स्तोत्र'' का विशिष्ट स्थान है और इसका प्रत्येक पद सिद्धि दायक मंत्र है। ऐसे अनुपम, अनूठे, लोकोत्तर एवं कृति के कृतिकार श्री मानतुंगाचार्य के जीवन व समय के सम्बनध में ऐतिहासिक कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। जैन धर्म-दर्शन के ज्ञाता, इतिहासकार डा ज्योति प्रसाद जैन, लखनऊ तथा तीर्थंकर मासिक पत्रिका के सम्पादक परम विद्वान डॉ० नेमिचन्द जैन, इन्दौर के अनुसार ''जैन परम्परा में करीब बारह मानतुंग नाम के संत हुए हैं। इनमें से ''भक्तामर स्तोत्र'' के रचनाकार कौन से मानतुंग है, कहा नहीं जा सकता। कृतिकार समय के प्रवाह में बह जाता है, विलीन हो जाता है, उसकी कृति अपनी अनुपमता, श्रेष्ठता अद्‌भुतता, गुणवत्ता, महात्म्य आदि विशेषताओं के कारण काल को जीत लेती है, कालजयी बन जाती है। इन्हीं विशेषताओं के कारण ''भक्तामर स्तोत्र'' एक काजलयी कृति-रचना है।

इस स्तोत्र के आविर्भाव के सम्बन्ध में मतैक्य नहीं हैं। कुछ विद्वान इसका आविर्भाव वाराणसी के राजा हर्षदेव के समय में, तो कुछ विद्वान उज्जैन के राजा भोजदेव के समय मे होना मानते हैं, किन्तु लोक प्रचलित धारणा तथा मान्यता के अनुसार कहा व सुना जाता है कि मालव अंचल (मध्य प्रदेश) की शस्य श्यामला ऐतिहासिक धारा नगरी के महान् प्रतापी शासक साहित्य, संस्कृति एवं कला के उन्नायक राजा भोजदेव परमार (विक्रम की सातवीं सदी) ने अपने मंत्री जैन धर्मावलम्बी श्री मतिसागर से एक दिन बात ही बात में कहा कि ''हमारी राजसभा मे कई ब्राह्मणधर्मी विद्वानों द्वारा अद्‌भुत चमत्कार प्रदर्शित किये गये हैं। यथा कलिकुलगुरु कालिदास द्वारा कालिका की उपासना-आराधना से अपने कटे हुए हाथ पैरों को जोड़ना, कवि माघ द्वारा सूर्योपासना से अपना कुष्ठ रोग दूर करना, कवि भारवि द्वारा अम्बिका की भक्ति से अपना जलोदर रोग दूर करना आदि। क्या तुम्हारे जैन धर्म में भी कोई संत, विद्वान या सुकवि हैं जो ऐसे अद्‌भुत चमत्कार प्रदर्शन की क्षमता रखता है?''

संयोग ऐसा बना कि कुछ ही दिनों बाद ग्रामानुग्राम धर्मोद्योत करते हुए महामुनि श्री मानतुंगाचार्य का धारा नगरी में पदार्पण हुआ, मंत्री श्री मतिसागर ने आचार्यश्री के पदार्पण के समाचार राजा से कहे। साथ ही यह संकेत भी किया कि आचार्यश्री एक महाप्रभावक संत हैं, आप उन्हें राज्यसभा में आमंत्रित कीजिए। वे कोई न कोई अद्‌भुत चमत्कार दिखला कर आपको अवश्य ही सन्तुष्ट करेंगे। राज़ा ने अपने अनुचरों को भेजकर आचार्यश्री को राजसभा में आकर कोई चमत्कार दिखलाने का संदेश भिजवाया, किन्तु सांसारिक क्रिया-कलापों, विषयों से विरक्त, वीतराग मार्ग के पथिक आचार्यश्री ने अपनी संत-समाचारी में किसी प्रकार का चमत्कार प्रदर्शित करने का निषेध होने से राजसभा में उपस्थित होने से इन्कार कर दिया। राजा ने इसे राजाज्ञा का उल्लंघन मान कुपित हो अनुचरों को आदेश दिया कि आचार्यश्री को बन्दी बनाकर राजसभा में उपस्थित किया जाय। आदेशानुसार आचार्यश्री को राजसभा में उपस्थित किया गाय। वहां उन्हें आपाद कंठ दृढ़ लौह शृंखलाओं से वेष्ठित कर तलघर में डाल दिया और वहां जितने भी ताले उपलब्ध थे जड़ दिये। ऐसी विषम परिस्थिति में अपने ऊपर अकस्मात आये उपसर्ग को देख आचार्य श्री निरपेक्ष भाव से अपने आराध्य भगवान ऋषभदेव की स्तुति में लीन हुए। भक्ति का प्रवाह ऐसा प्रवहमान हुआ कि इधर से स्तुति में एक-एक श्लोक की रचना करते गये और इधर एक-एक ताला टूटता गया। स्तुति में आचार्यश्री के अंतर से ज्यों ही ''आपद कंठमुरु शृंखला वेष्ठितांगा'' श्लोक प्रस्फुटित हुआ कि दृढ़ लौह शृंखलाएं कच्चे सूत (धागे) की तरह टूट कर बिखर गईं और स्तुति में स्तोत्र पूर्णकर वे राजसभा में उपस्थित हो गये।

इस चमत्कार पूर्ण घटना से राजा, दरबारी (सभासद) तथा नगरवासी बहुत ही प्रभावित हुए। जैन धर्म की महती प्रभावना हुई और वहां उपस्थित सभी ने आचार्य श्री को श्रद्धा-भक्ति पूर्व नमन किया। उनकी जय-जयकार की और जैन धर्म स्वीकार किया। इससे स्पष्ट है कि भक्तामर स्तोत्र एक महान् प्रभावी, चमत्कारी, महिमावन्त एवं मंगलकारी स्तोत्र है। इस स्तोत्र के माध्यम से भक्त, भक्ति एवं समर्पण के सोपान पर चढ़कर स्तोत्रकार (रचयिता) की तरह ही अपने आराध्य के साथ घनिष्ट एकात्मकता की अनुभूति करता हुआ परमात्मा की अनन्त शक्तियों का पारस स्पर्श पाकर जैसे स्वयं के अन्तर में अनन्त शक्ति का उद्‌भव तथा प्रस्फुटन की अनुभूति कर सकता है।

ऐसे अद्वितीय, अनूठे, अद्‌भुत एवं भक्तिरस से परिपूर्ण स्तोत्र से जैन धर्मावलम्बियों के अतिरिक्त कई जैनेत्तर विद्वान, संस्कृत भाषाविद पंडित भी प्रभावित हैं। मैक्समूलर, कीथ, बेवर, हरमन जैकोबी, विण्टर नित्स शालोट, क्राउसे आदि पाश्चात्य प्राच्यविदों विद्वानों तथा भारतीय विद्वानों ने तथा भारतीय विद्वानों-मनीषियों में सर्वश्री पं० दुर्गाप्रसाद , पं० काशीनाथ शर्मा, गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बलदेवप्रसाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपाध्याय, भोला शंकर व्यास, गिरधर शर्मा ''नवरत्न'', पं. काशीनाथ त्रिवेदी, पं० गिरधारीलाल शास्त्री, डॉ० शंकरदयाल शर्मा, मोतीलाल मेनारिया, डॉ० भगवतीलाल व्यास आदि ने इस स्तोत्र की श्रेष्ठता से मुग्ध प्रभावित हो मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। इतना ही नहीं हर्मन जैकोबी ने जर्मन भाषा में, क्राउसे महाशय और अशोक कुमार सक्सेना ने आंग्ल भाषा में, पं० गिरधर शर्मा नवरत्न' ने समश्लोकी हिन्दी भाषा में, पं० गिरधारीलाल शास्त्री ने राजस्थानी की विभाषा मेवाड़ अंचल में बोली जाने वाली भाषा मेवाड़ी में, पं० देवदत्त ओझा ने लघु छन्द दोहा में तथा हेमराज पाण्डेय, पं० बालकृष्ण शर्मा, पं० बालमुकुन्द जोशी, ओम प्रकाश कश्यप आदि कई विभिन्न भाषा-भाषी विद्वानों, पंडितों, कवियों, अनुवादकों साहित्यानुरागी श्रद्धालुओं ने इस स्तोत्र का विविध भाषा, छन्दों, राग-रागिनियों में पद्यानुवाद कर अपने आपको गौरवान्वित किया है। कई विभिन्न भाषा-भाषी विद्वानों ने इस स्तोत्र पर टीकाएं, इसके प्रभाव से सम्बन्धित कथा-कहानियां, वार्ताएँ लिखीं। कई श्रद्धालु-भक्तों ने इसके आधार पर अपने आराध्य की स्तुति स्तवना में विभिन्न स्तोत्रों की तथा कुछ कवियों ने इसके पदों को लेकर पाद पूर्ति स्तोत्रों की रचनाएं की। कुछ विद्वानों ने इसके श्लोकों में प्रयुक्त शब्दों के उच्चारण से उत्पन ध्वनि तरंगों को रेखांकित कर यंत्रों की तथा अक्षरों का अक्षरों से तारतम्य बिठाकर ऋद्धियों, मंत्रों, बीजाक्षरों की सर्जनाएं की। कुछ पंडितों, क्रिया काण्डी/क्रियाकर्मियों ने स्तोत्र का पाठ करते समय वातावरण शुद्ध और चित्त/मन एकाग्र रहे, इस दृष्टि से पूजा-अर्चना के विधि-विधान निर्मित किये, इसके अतिरिक्त कई श्रद्धालुओं ने अपनी-अपनी दृष्टि से अपनी-अपनी भाषा में इस स्तोत्र के अनुवाद किये, व्याख्याएं तथा विवेचनाएं लिखी। कई श्रद्धालुओं ने इसे स्वर, लय, तालबद्ध कर गाया और कैसेट्स तैयार किये। कई भक्त कलाकारों ने इसके श्लोकों के भावों को कल्पना में संजोकर इसे चित्रित किया, सचित्र संस्करण प्रकाशित किये और विडियों कैसेट्स तथा सी०डी० बनाये।

भक्तामर स्तोत्र की सर्व प्रियता, मान्यता एवं महात्म्य का जहां तक सम्बन्ध है, यहां यह उल्लेख करना अप्रासंगिक व अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि जैन धर्म में अनेकानेक स्तोत्रों में विविध आकार-प्रकार में यदि किसी स्तोत्र के सर्वाधिक संस्करण लाखों लाख प्रतियों में प्रकाशित हैं तो वे एक मात्र ''भक्तामर स्तोत्र'' के ही हैं।

इस आलेख को समाप्त करूं इसके पूर्व में पाठकों का ध्यान एक ऐसी उपलब्धि की ओर आकर्षित करना चाहूँगा कि इस स्तोत्र के विभिन्न भाषाओं में हुए १३१ (एक सौ इकतीस) अनुवाद हमें अब तक उपलब्ध हुए हैं जिनमें से १२४ (एकसौ चौबीस) अनुवादों का एक वृहद् संकलन (ग्रंथ) लगभग ११५० (एक हजार एक सौ पचास) पृष्ठों में ''भक्तामर भारती'' नाम से प्रकाशित हो चुका है जिसका प्रकाशन श्री खेमराज जैन चैरिटेबल ट्रस्ट सागर से हुआ है और संकलन-सम्पादन स्व० पं० कमलकुमार जैन शास्त्री ''कुमुद'' खुरई (जिला-सागर म०प्र०) और इस आलेख के लेखक (विपिन जारोली, कानोड़) ने किया है। इस ग्रंथ का द्वितीय संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है।

राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी की मासिक पत्रिका ''जागती जोत'' के यशस्वी सम्पादक साहित्यकार डॉ० भगवतीलाल व्यास के आलेख : -

''भक्ति एवं काव्य का अनूठा संगम भक्तामर भारती'' के अनुसार ''भक्तामर भारती में सर्वाधिक चौरानवे अनुवाद हिन्दी में हैं। मराठी में नौ, गुजराती में आठ, राजस्थानी में व उर्दू में दो-दो, बंगाली, अवधी, तमिल, कन्नड़, अंग्रेजी तथा मेवाड़ी में एक-एक अनुवाद प्रकाशित है। इस ग्रंथ के सम्पादकों को यह श्रेय जाता है कि छत्तीस ऐसे पद्यानुवाद हैं जो कि अप्रकाशित हैं, उन्हें शोधकर इस संकलन में सम्मिलित कर प्रकाशित किये हैं।''

''भक्तामर भारती'' के सम्पादक द्वय की चयन दृष्टि की श्लाघा इस दृष्टि से भी की जानी चहिये कि पहली बार किसी कृति के इतने सारे पद्यानुपाठ पाठकों एवं श्रद्धालुओं को उपलब्ध करवाए गए हैं। इस संकलन में सबसे पुराना पद्यानुवाद श्री हेमराज पाण्डेय द्वारा किया गया है, जिसका काल १६७० ई० है। ''भक्तामर भारती'' में संकलित इतने सारे पद्यानुवादों का होना इस बात का द्योतक है कि मूल कृति (भक्तामर स्तोत्र) अपने आप में कितनी उत्कृष्ट एवं लोकप्रिय है। ऐसे युनिवर्सल एप्रोच वाले ग्रंथों का प्रणयन कभी-कभी ही हो पाता है। इस संकलन / ग्रंथ से आम पाठकों, श्रद्धालुओं, साहित्य मर्मज्ञों तथा शोधार्थियों को बड़ी सुविधा हो गई है।

नि:सन्देह ''भक्तामर भारती'' अपने आप में अद्वितीय एवं अनूठा ग्रंथ है और भक्तामर स्तोत्र भक्ति रसात्मक साहित्य में एक काजलयी स्तोत्र है।

दीवाकर दीप, गांधी चौक, कानोड़

■

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org